Outlook group

नोएडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी: उद्योग व शिक्षा जगत के बीच सेतु

डॉ देवेश कुमार सिंह,
अध्यक्ष, एनआईयू

आज शिक्षा के क्षेत्र में हो रही प्रगति से ही मिलकर चलना सभी को विशेषाधिकार है वे दिन हवा हुए जब केवल धनवान और उच्च श्रेणी के लोगों को शिक्षा मिलती थी आज ग्रामीण अंचल में पल रहे छात्र एवं छात्राओं को भी उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल रही है अभी शिक्षा के क्षेत्र में जागरूकता लाने की जरूरत है शहरों एवं गांवों में स्थानीय स्तर पर कोशलात्मक शिक्षा देने की जरूरत है शिक्षा की कोशलात्मक शैली शिक्षा के सामान्य अर्थ से अलग है जहां तक उद्योग और शिक्षा जगत के आपसी संबंधों का सवाल हे हमें विश्वविद्यालय स्तर पर विचार नहीं करना चाहिए बल्कि हमें बेसिक शिक्षा प्रणाली में सुधार कर शिक्षा के साथ कोशलात्मक शिक्षा प्रणाली को जोडना चाहिए मैं बताना चाहूंगा हाल ही में मुझे एक प्रतिष्ठित स्कूल में आमंत्रित किया गया जहां मुझे मिडिल शिक्षा के बच्चों में उर्जापूर्ण उत्साह दिखायी दिया मैंने छात्र-छात्राओं से बातचीत की तो मुझे ऐसा लगा कि हम इन छात्रों की विभिन्न उत्सुक प्रतिभाओं का पूर्ण रूप से प्रयोग नहीं कर पा रहे हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इनमें से अधिकांश बच्चों में हम व्यस्कों से कहं ज्यादा प्रतिभाएं छिपी है। हमें यह समझना चाहिए आज उद्योग जगत एक दशक पहले जब हम कॉलेज से पढ़कर निकले थे उसकी तुलना में वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अधिक प्रतिस्पर्धात्मक है।

शिक्षा में सुधार लाने कि लिए क्या किया जा सकता है, इस सम्बन्ध में मेरे ये कुछ विचार हैं। निसंदेह अन्य तरीके भी होंगें और प्रत्येक शिक्षाविद के इस विषय में अपने विचार और तर्क होंगे परन्तु जब तक हमें ऐसा मंच उपलब्ध नहीं हो जाता जहाँ हम उद्योग जगत के विशेषज्ञों और आपस में भी निरंतर संवाद करते रहें, तब तक यह सब मात्र अटकलबाज़ी और कयास हैं। हमें एकदम शुरू से शुरुआत करनी होगी। हमें आपस में बातचीत करनी होगी, योजना बनानी होगी और इस क्षेत्र के सभी लोगों का उस रास्ते पर चलना सुनिश्चित करना होगा, जो हमारे बच्चों के लिए लाभकारी हो। तब ही हम यह आशा कर सकेंगे कि जब तक वे कॉलेज से पढ़कर निकलें तब तक वे ज़िम्मेदार और विक्रेय मानव पूंजी बन सकें। हमें एक स्वस्थ कार्यबल की ज़रुरत है - कौशल और मानसिक स्थिरता दोनों दृष्टियों से। इसलिए हम शिक्षक तभी आगे बढ़ सकते हैं जब हम यह कह सकें कि हम अपने बच्चों के लिए और उनके ज़रिये काम करते हैं - यही हमारा 'योगदान' और हमारी दूरगामी प्रतिबद्धता होगी।